

(Topic - शिक्षण में प्रेणा की भूमिका)

प्रेणा की प्रक्रिया को शिक्षण कहते हैं। लेकिन यह प्रेणा वास्तव में सीखने की इच्छा या उद्देश्य या निर्माता है। आकस्मिक शिक्षण अर्थात् ऐसा शिक्षण जिसके पीछे कोई इच्छा या उद्देश्य न हो, विश्वसनीय नहीं होता है ऐसी स्थिति में व्यक्ति सीख नहीं सकता है और नहीं भी। दूसरी ओर इच्छा या उद्देश्य होने पर वह व्यवस्थित ढंग से जान-बूझकर अवश्य ही सीख लेगा। इस प्रकार का सीखना साधनात्मक होता है जिसका चयन व्यक्ति जान-बूझकर किसी अपेक्षित लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए करता है। अतः चयनात्मक शिक्षण वास्तव में अभिप्रायित होता है। इसी कारण प्रेणा को शिक्षण की आवश्यकता माना जाता है। गेर्स आदि (Gersl et al, 1962, 1964) ने कहा है "प्रेणा शिक्षण का एक आवश्यक कारक है।"

शिक्षण में प्रेणा के निम्नलिखित तीन कार्य हैं -

(i) संचालक कार्य :- प्रेणा या प्रेरक व्यक्ति या प्राणी की क्रिया का संचाल करता है। प्रेणा से प्रभावित होकर वह किसी क्रिया को करने या किसी विषय को सीखने के लिए सक्रिय हो उठता है। शक्ति (energy) निरुत्कृत हो जाती है और क्रिया उत्तेजित हो जाती है।

(ii) चयनात्मक कार्य :- (Selection function) :- प्राणी या व्यक्ति द्वारा सीखे जाने वाले विषय अथवा निष्पादित की जाने वाली क्रिया के चयन में प्रेरक सहायक होता है। मानव शिक्षण (Human Learning) हमेशा चयनात्मक होता है (आकस्मिक शिक्षण को छोड़कर) जो प्रेरक के इसी चयनात्मक कार्य का परिणाम है होता है। गेर्स आदि (Gersl et al, 1964) ने इसका चर्चा करते हुए कहा है कि "प्रतिक्रियाएँ चुन ली जाती जाती हैं और सीख ली जाती हैं, क्योंकि कार्यात्मक रूप में आवश्यकताओं तथा प्रेरक से सम्बन्ध होता है।"

(iii) दिशात्मक कार्य (Direction function) :- प्रेणा व्यक्ति या प्राणी को एक विशेष दिशा (Direction) में सीखने या क्रिया करने हेतु बाध्य करती है। भ्रष्ट व्यक्ति कुछ ऐसी वस्तु की दिशा में सक्रिय हो जाता है जो उसकी आवृत्ति की

शंतति का लक्ष्य । व्यक्ति एक विशेष दिशा में तब तक सक्रिय होकर क्रिया करता रहता है या सीखता रहता है जब तक कि अपेक्षित लक्ष्य (~~सि~~ (Desired goal) प्राप्त नहीं हो जाता है । प्रेरणा जितना ही ही अधिक प्रबल होती है ~~व्यक्ति~~ अथवा प्रोत्साहन (Incentive) जितना ही अधिक सुलभवान (Availability) होता है, सीखने की तृप्तता एवं कुशलता उतनी ही अधिक होती है, यद्यपि दोनों के बीच पूर्ण अनुकूलता नहीं होती है । प्रेरणा के अद्वैत के अलपक्षपात प्रकाश डालते हुए गोसा आदि (Dinakar et al, 1965) ने कहा है " प्रेरकों के चयन से संबंधित कार्य से सम्बद्ध उनकी भूमिका व्यवहार निर्देशन में है ।"